वृहद स्तर पर पाठ्यचर्या मूल्यांकन -

इसके द्वारा सम्पूर्ण पाठ्यचर्या की प्रभाविता का मूल्यांकन किया जाता है। मुख्यतः इसे निम्न प्रकार से देखा जा सकता है।

(i) छात्र कोर्स को पूरा करके कहीं पर नौकरी कर रहे हैं।
(ii) विषय विशेषज्ञ द्वारा पाठ्यचर्या की विषयवस्तु के सही होने या न होने का पता लगाना।
(iii) प्रधान शिक्षक द्वारा यह पता लगाना कि स्कूल में यह पाठ्यवस्तु कितनी सार्थक है?
(iv) पाठ्यचर्या विशेषज्ञ द्वारा विषयवस्तु की सार्थकता देखना।
(v) माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के परीक्षा इकाई के अधिकारी द्वारा इसका निर्णय होगा कि इस पाठ्यचर्या को लागू किया जाये या नहीं।

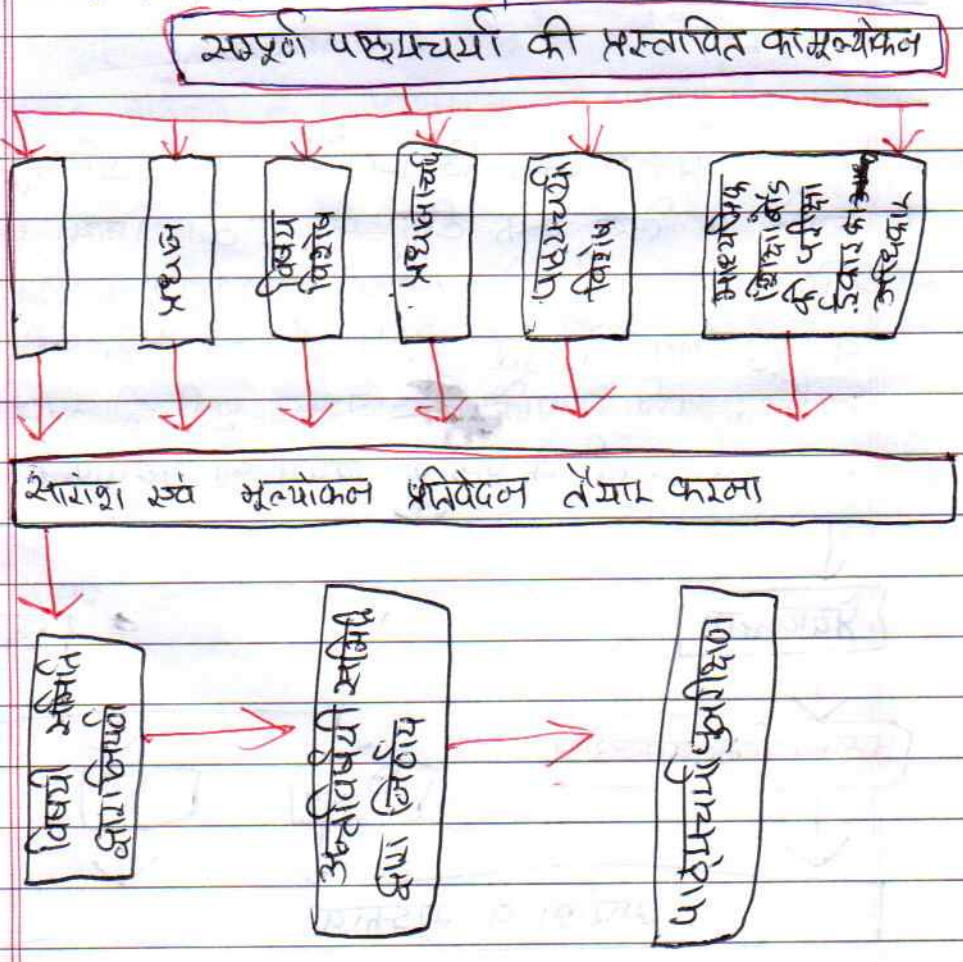

पाठ्यक्रम विकास के विभिन्न उपागम

व्यवहारवादी उपागम –

पाठ्यक्रम के इस उपागम का आधार व्यावहारिक मनोविज्ञान है। इसमें शैक्षिक उद्देश्यों पर अधिक बल देते हुए पाठ्यक्रम के प्रारूप को विकसित किया जाता है। छात्रों के अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन के रूप में उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है। व्यवहार परिवर्तन का ज्ञान मूल्यांकन से होता है अतः इसे मूल्यांकन प्रतिमान भी कहा जाता है। इस प्रतिमान के अन्तर्गत निम्नलिखित सोपानों का अनुसरण किया जाता है –

- शिक्षण उद्देश्यों का प्रतिमान
- उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सीखने के अनुभवों का सृजन
- छात्रों में होने वाले व्यवहार परिवर्तन का मूल्यांकन

इस उपागम पर विकसित दो प्रतिमान निम्नलिखित हैं –

(1) हिल्दा टाबा का व्यापक मूल्यांकन पाठ्यक्रम प्रतिमान।

(2) मुखोपाध्याय निर्मित पाठ्य मूल्यांकन का प्रतिमान।

हिन्दी भाषा का व्यापक मूल्यांकन पाठ्यक्रम प्रतिमान

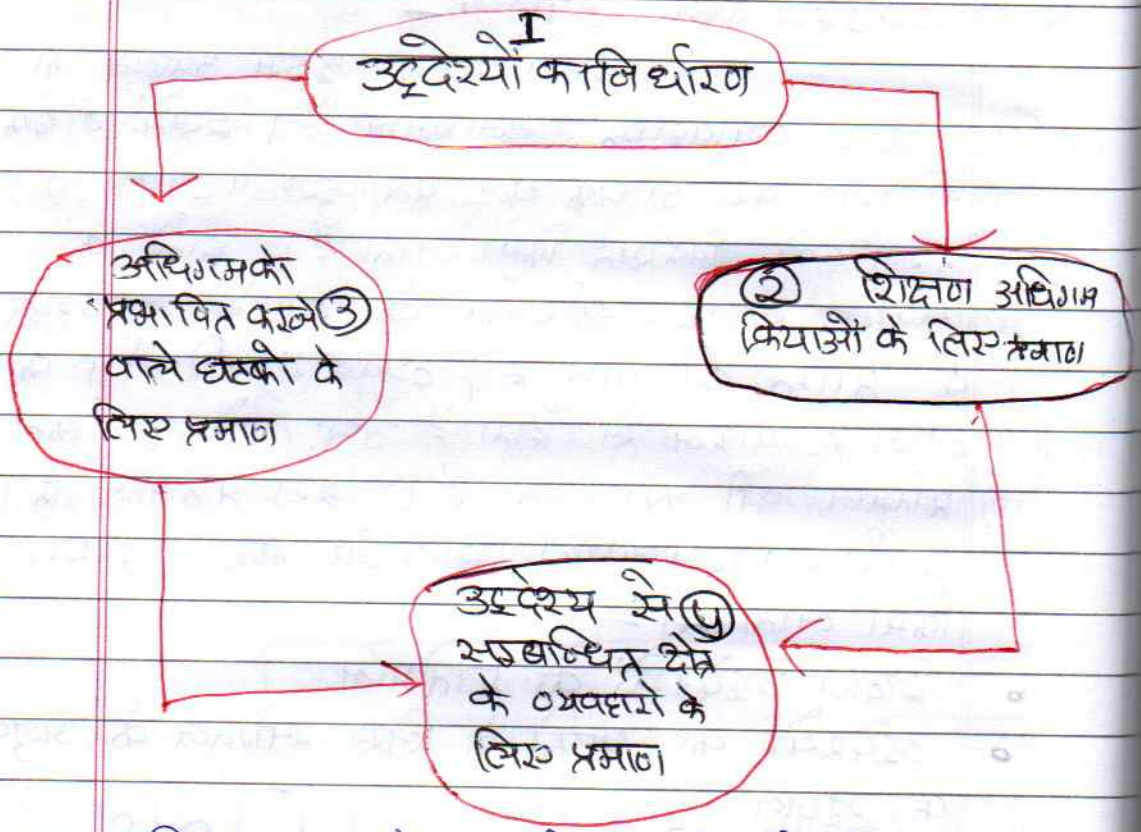

हिन्दी भाषा में उपरोक्त सोपानों के आधार पर पाठ्यक्रम के प्रारूप के लिए चार अवस्थाओं का भी उल्लेख किया है। इन अवस्थाओं एवं सोपानों में बहुत अधिक समीपता भी है। ये चार अवस्थाएँ हैं—

① मूल्यांकन हेतु आवश्यक प्रदत्तों के स्वरूप का निर्धारण करना।

② आवश्यक यन्त्रों एवं प्रक्रिया का चयन करना अथवा उनके स्वरूप को निर्मित करना।

③ आवश्यक परिवर्तन से सम्बन्धित परिकल्पना के विकास हेतु प्रदत्तों का विश्लेषण एवं अर्थापन करना।

④ परिकल्पना को कार्य रूप में परिवर्तित करना।

मुखोपाध्याय निर्मित पाठ्यक्रम मूल्यांकन प्रतिमान

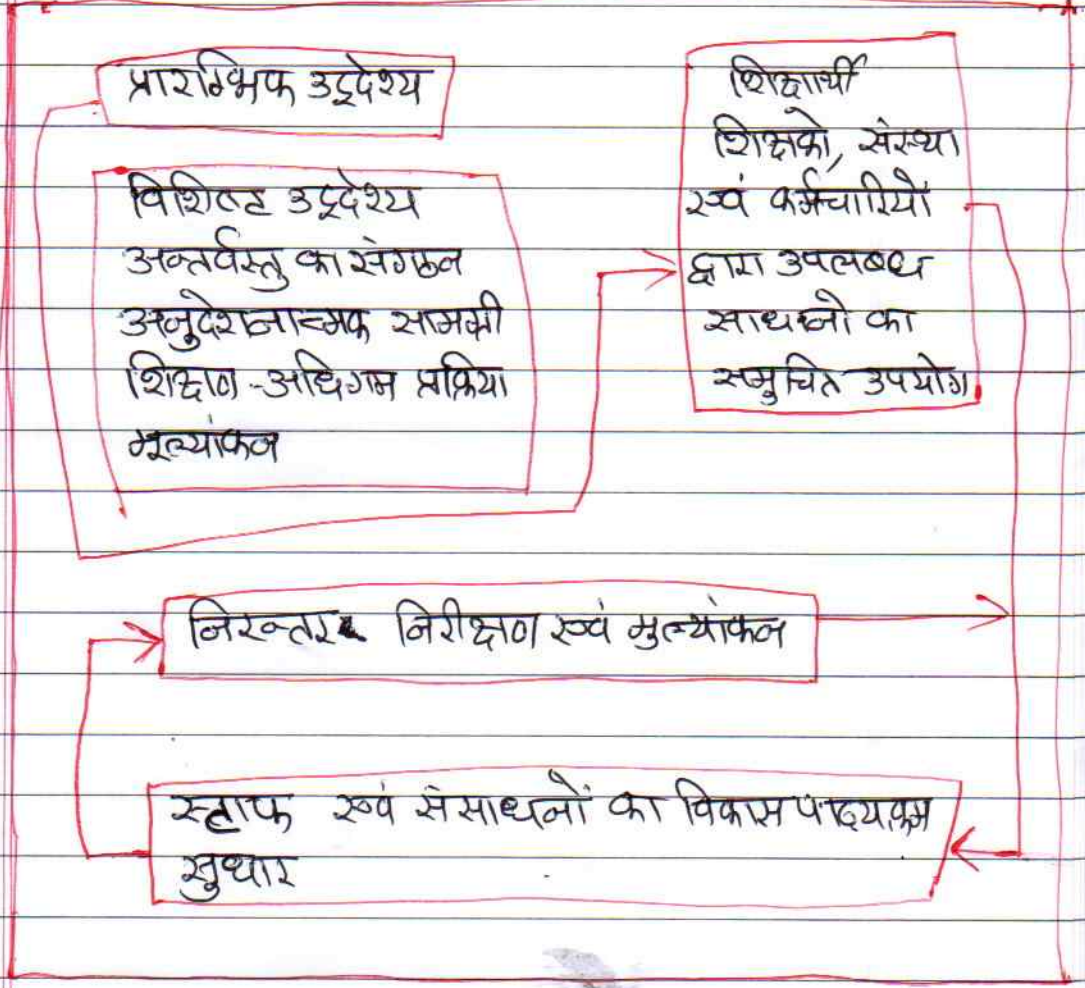

पाठ्यक्रम का कार्य शिक्षण एवं अधिगम में सम्बन्ध स्थापित करना है। मुखोपाध्याय ने पाठ्यक्रम विकास को दो अवस्थाओं में विभाजित किया है जिन्हे पाँच सोपानों में सम्पन्न किया जाना चाहिए।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्था
पाण्डेयपुर, वाराणसी